Purnea University Purnea

Department of philosophy

P.hD course work

Subjec - Comparative Religion (PPHIL-607)

LACTURE .8

Date – 22/04/2020

Dr. Anita Mahto

Associate professor

HOD P.G department of Philosophy

Purnea college Purnea

Scanned by CamScanner

11.

The Cardinals principles of Islam
इस्लाम के प्रधान सिद्धान्त
इस्लाम धर्म की मूल विशेषताएं

15Q16

①

Q Chief characteristics of Islam?

Ans:— इस्लाम Symetic धर्मों में से एक है। इसके प्रवर्तक मोहम्मद साहब को आखिरी पैगम्बर माना जाता है। मोहम्मद साहब ने किसी नए धर्म को चलाने का दावा नहीं किया बल्कि उन्होंने अब्राहम के प्राचीन धर्मों को ही पूर्ण प्रतिष्ठित की। इस्लाम धर्म में मोहम्मद के पहले जितने भी पैगम्बर हुए सबों को मान्यता दी गयी है। कुरान में कहा गया है कि अल्लाह ने एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर भेजा जिनमें प्रमुख आदम, अब्राहम, नूह, डेविड मोसेज, जीसस आदि हैं। इस शृंखला में मो० साहब अन्तिम पैगम्बर हैं। और चूंकि उन्हें सम्पूर्ण सत्य उद्घाटित हुआ। ऐसा कहा जाता है कि उनके बाद अब कोई पैगम्बर नहीं आएगा। और चूंकि कुरान में सम्पूर्ण सत्य का उद्घाटन है, इसलिए कुरान अन्तिम ग्रंथ है।

इस्लाम शब्द सलमा से निकला है। सलमा का अर्थ है समर्पण। समर्पण का भाव ही इस्लाम धर्म का केन्द्रीय दर्शन है। इसके अनुसार सम्पूर्ण जगत सूर्य, चाँद, सितारे, पृथ्वी सब अल्लाह के इशारे पर घूमते हैं और सबों ने अपने आप को अल्लाह की मर्जी पर समर्पित कर दिया। यहाँ तक कि घास का एक पत्ता भी उसकी मर्जी के बिना नहीं हिलता है। चूंकि सम्पूर्ण जगत ईश्वर की इच्छा के समक्ष समर्पित है, इसलिए सम्पूर्ण जगत इस्लाम है। मनुष्य का भी कर्तव्य है कि अन्य वस्तुओं की भांति वह भी अपनी इच्छा से ईश्वरेच्छा में अपनी इच्छा को विलीन कर दे। ईश्वर के प्रति पूर्णतः समर्पित हो जाए। इसी में धर्म का सार है और इसी से व्यक्ति को शान्ति, मुक्ति और आनन्द तथा विश्राम मिल सकता है। जो ईश्वर के चरणों में अपने को समर्पित कर देते हैं वे मोमीन कहे जाते हैं और जो ईश्वर की आज्ञा के खिलाफ चलने की कोशिश करते हैं उन्हें काफिर कहा जाता है।

इस्लाम धर्म की विशेषताएं निम्नलिखित हैं :—

① अल्लाह में विश्वास :→ इस्लाम धर्म एकेश्वरवादी है। इसके अनुसार 'ला इलाही इल अल्लाह मोहम्मदुर रसुल्लाह' अल्लाह के अलावा कोई ईश्वर नहीं है और मोहम्मद उसके संदेशवाहक हैं।

मोहम्मद साहब ने जो अल्लाह की धारणा दी है वह यहुदी धर्म के परमात्मा के धारणा से मिलती-जुलती है। मोजेज ने अल्लाह को God of Power माना। जीसस की तरह God is love नहीं है। उसी तरह

मोहम्मद साहब ने भी अल्लाह को God of power माना और मनुष्य का कर्तव्य उसके सामने झुकना। लेकिन मोहम्मद साहब ने ये भी स्वीकार किया कि अल्लाह अलरहमान और रहीम (दयालु) भी हैं। उन्होंने ईश्वर की दयालुता और क्षमाशीलता पर जोर दिया। उनके अनुसार अल्लाह Absolute power है। वह एक और एकमात्र सत्ता है। ईसाई धर्म में जैसे तीन सत्ताओं में विश्वास किया जाता है वैसा इस्लाम में नहीं किया जाता है। क्योंकि इस्लाम मानता है कि अल्लाह की Sovereignty अविभाज्य है। इस्लाम अल्लाह के दो गुण पर विशेष जोर दिया है → संप्रभुता और सर्वशक्तिमान। इसके अनुसार अल्लाह संप्रभुशक्ति है और वह सर्वशक्तिमान है। इस्लाम अल्लाह को निराकार मानता है लेकिन निर्गुण नहीं। अल्लाह का कोई विशेष आकार नहीं है। इसलिए विशेष आकार में उसकी रचना कुफ्र (नास्तिकता) है। इसी कारण इस्लाम मूर्ति रचना का विरोध करता है। अल्लाह में सात गुण माने गए हैं— ① शक्ति, ② ज्ञान, ③ जीवन, ④ संकल्प, ⑤ श्रवण, ⑥ दर्शन, ⑦ वाक्। कुरान में अल्लाह के तीन सुन्दर नाम गिनाए गए हैं। अल्लाह संसार का सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता है। उसका विधान अटल है।

② कुरान में विश्वास :→ मोहम्मद साहब को ईश्वर ने Gebrail (जिब्राइल) द्वारा पढ़ना सिखाया। इस प्रकार उनकी शिक्षा कुरान के अनुसार अद्भुत बड़ी शक्ति की थी। इस्लाम धर्म की प्रमुख ग्रंथ कुरान है। कुरान का अर्थ है पढ़ने योग्य पुस्तक। जिस तरह यहूदियों का पवित्र धर्म ग्रंथ Old Testament है और ईसाइयों का New Testament उसी तरह मुसलमानों का आधारभूत ग्रंथ कुरान शरीफ है। मुसलमान कुरान शरीफ को अन्तिम पुस्तक मानते हैं क्योंकि उनका विश्वास है कि अन्य ग्रंथों में खुदा ने थोड़ी-थोड़ी मात्रा में क्रमशः सत्य का अनावरण किया और कुरान में सम्पूर्ण सत्य का उद्घाटन कर दिया गया। इसलिए कुरान आखरी ग्रंथ है। सभी धर्मग्रंथों का निचोड़ है। मुसलमानों का विश्वास है कि कुरान शाश्वतकाल से खुदा के सिंहासन के नजदीक सर्वोच्च स्वर्ग में मौजूद था, वहां से रमजान के महीने में Alqadra (अल क़द्र) की रात में वह नीचे उतरा, क्रमशः तेईस वर्षों के अन्दर मो० साहब पर revealed (प्रकट) हुआ। इस प्रकार कुरान अपौरुषेय (apostle) है। कुरानशरीफ में 114 अध्याय हैं जिनका विषय धर्म, दर्शन, नैतिकता, कानून, राजनीति आदि है।

③ देवदूतों में विश्वास :→ यद्यपि इस्लाम एकेश्वरवादी है फिर भी वह देवदूतों में विश्वास करता है। देवदूत भी अल्लाह के अधीन है इसलिए उनसे अल्लाह की संप्रभुता नष्ट नहीं होती है। देवदूत सूक्ष्म शरीर है। और प्रकाश किरणों के बने हैं। वे ईश्वर के संदेशवाहक हैं, वे पवित्र और पापों से मुक्त हैं। वे दिन रात खुदा की वंदना और उसके हुक्म की तामिल करते रहते हैं। इन देवदूतों में चार प्रमुख हैं — जीब्राइल, मैकाइल, इसराफिल और इजराइल। जीब्राइल ईश्वर के संदेशवाहक हैं और सत्य का अनावरण करता है। मैकाइल यहुदियों का मित्र और रक्षक है। असराफिल अन्तिम दिन में मुर्दों को कब्र से जगाने के लिए बिगुल बजाता है। इजराइल मृत्यु के बाद आत्मा को शरीर से अलग करता है। इसके अलावा दो देवदूत नकीर और मुनकीर ऐसे हैं जो कयामत के दिन मनुष्य के पुण्य और पापों का लेखा-जोखा करते हैं।

④ पैगम्बरों में विश्वास :→ इस्लाम के अनुसार अल्लाह ने यद्यपि मनुष्य को इच्छा स्वातंत्र दिया है, फिर भी उनकी बुद्धि उनका सही मार्ग दर्शन करने में असमर्थ है। इसलिए अल्लाह समय-समय पर उन्हें सही रास्ता दिखलाने के लिए अपने पैगम्बर को भेजता है। यद्यपि अल्लाह ने धरती के कोने-कोने में अपने पैगम्बर भेजे हैं फिर भी कुछ महत्वपूर्ण पैगम्बरों के नाम कुरान में उल्लेखित हैं और सभी पैगम्बरों में ईमान लाने पर जोर दिया गया है। मो०साहब चूंकि आखिरी पैगम्बर हैं इसलिए उनकी बात को सबसे अधिक प्रमाणिक माना गया है और 'कुरान' एवं 'हदीस' को जीवन का पथ प्रदर्शक ग्रंथ माना गया है।

⑤ कयामत में विश्वास :→ इस्लाम में यह माना जाता है कि एक दिन इस दुनियाँ का अन्त हो जाएगा। कयामत होगी और फिर day of judgement होगा। इस्लाम मानता है कि मृत्यु के बाद देह मिट्टी में मिल जाती है लेकिन उसका कुछ अँश कयामत तक कायम रहता है। कयामत के दिन फिर मुर्दे कब्र से जायेंगे। उनके कर्मों का लेखा-जोखा होगा और सत्कर्मियों को स्वर्ग तथा दुष्कर्मियों को नरक भेजा जाएगा। कुरान में सात प्रकार के नरकों का वर्णन है जिसमें तरह-तरह के कष्ट होते हैं। साथ ही साथ उसमें सात स्वर्ग का भी वर्णन है, जहाँ अत्यन्त सुख है। सातवें स्वर्ग में आत्माएँ ईश्वर के सिंहासन के नजदीक रहकर बराबर उनका दर्शन करती रहती है।

Scanned by CamScanner

इसके अलावे इस्लाम में पाँच प्रकार के धौरिपत (कर्मकांड) बताए गए हैं जिन्हें इस्लाम का पाँच स्तम्भ माना जाता है। वे हैं— नवाज, रोजा, जकात, हज्ज और जेहाद। इस्लाम में ईश्वर की प्रार्थना या नवाज पर सबसे पहले अधिक जोर दिया गया है। कुरान में बार-बार कहा गया है कि मनुष्य का, ईश्वर समक्ष नमन करना, उसकी स्मृति करना, और प्रार्थना करना ही धर्म है। दिन भर में पाँच बार नमाज का विधान है। सूर्योदय के पहले, मध्य काल, सूर्यास्त के पहले, सूर्यास्त के बाद और रात्रि में नमाज ही इस्लाम की साधना है।

नमाज के साथ ही साथ रोजा एक प्रमुख धार्मिक कृत्य है। रोजा का अर्थ है उपवास। रमजान के महीने में एक महीना तक रोजा रखने का आदेश है। रोजा तीन प्रकार का होता है क्षुधा का नियंत्रण, इन्द्रियों का नियंत्रण और हृदय में उठनेवाली चिंताओं का नियंत्रण। यह तन और मन की पूर्ण शुद्धता है।

नमाज और रोजा के साथ ही साथ इस्लाम में जकात पर भी जोर दिया गया है। जकात का अर्थ है सामर्थ्य के अनुसार दान। हर व्यक्ति को सामर्थ्य के अनुसार दान करना चाहिए। कम से कम अपने आय का चालीसवाँ हिस्सा दान कर देना चाहिए। इस्लाम में केवल व्यक्तिगत साधना पर ही बल दिया गया है और जकात वस्तुतः दीन-दुखी, अपाहिज, मजलूम की सेवा है।

हज्ज या तीर्थाटन को भी इस्लाम में एक धार्मिक कृत्य माना गया है। मक्का जो मुसलमान का तीर्थ-स्थान है उसकी यात्रा को हज्ज कहते हैं। जो हज्ज को जाते हैं उन्हें अपने सभी कर्जों का भुगतान कर देना चाहिए तथा दान-धर्म करना चाहिए। योग्य साथियों का चुनाव कर तीर्थाटन पर निकलना चाहिए तथा नमाज तथा कुरान की आयतों का पाठ करना चाहिए।

जेहाद का अर्थ है धर्म के लिए युद्ध। इस्लाम के काफिरों को सही रास्ते पर लाने का जोर दिया गया है। जो खुदा में विश्वास नहीं करते हैं उनमें खुदा का विश्वास जगाना जेहाद या धर्म के लिए युद्ध है। जेहाद का अर्थ वास्तव में खून खराबी नहीं है बल्कि नास्तिकों को अधीन बनाना है। इस धार्मिक कृत्यों के अलावे इस्लाम में कुछ त्योहार भी मनाए जाते हैं जैसे ईदुल फित्र, ईद उद् जोहा इत्यादि।

Am

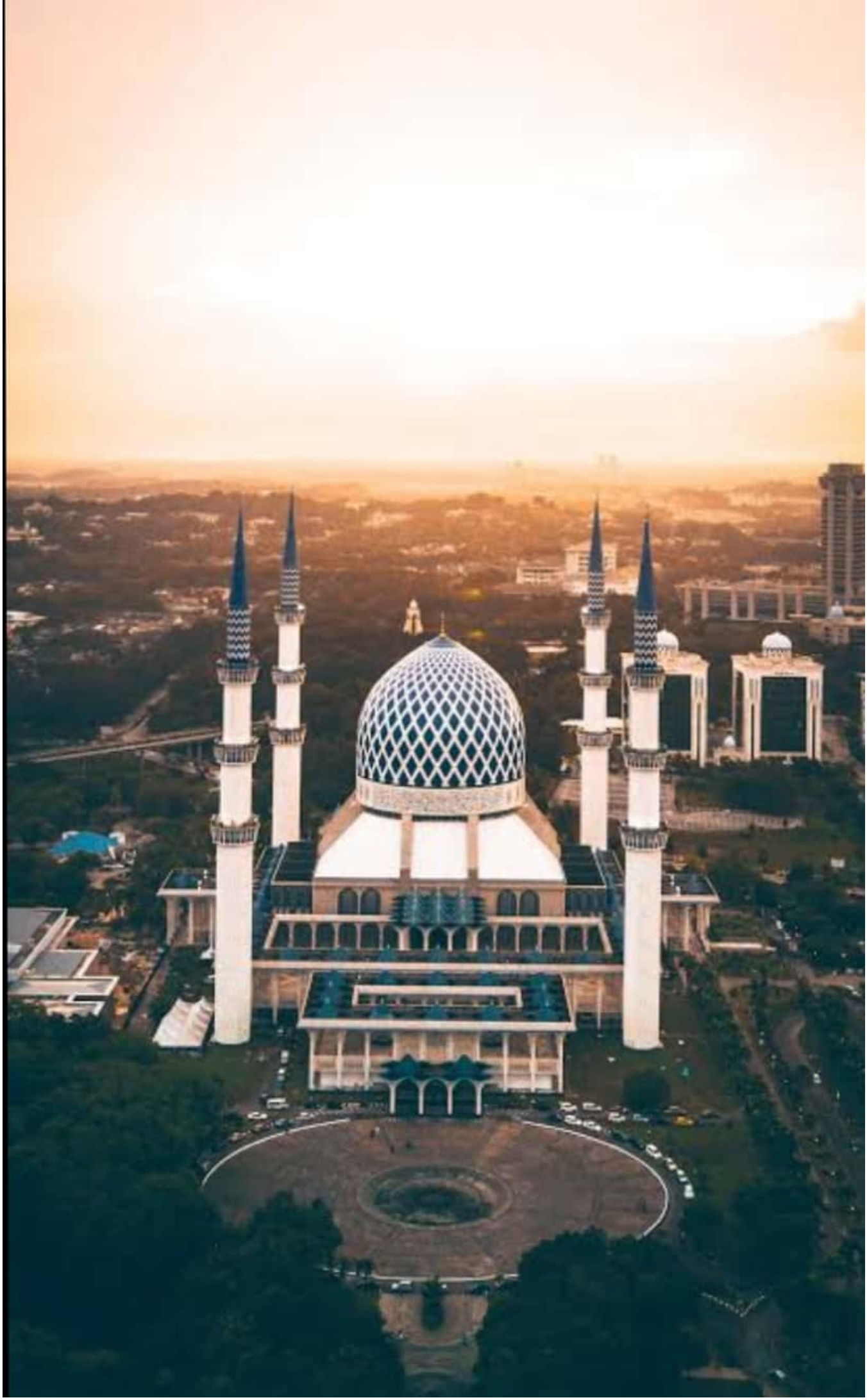

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner